56

अप्रिय से प्रेम कैसे करें

(12:14, 17- 21)

स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के निकट एक जवान चिल्लाता हुआ घर की ओर भागा, ''मैंने अन्तिम परीक्षा दे दी है!'' उसके पिता ने सिर हिलाया परन्तु सोचने लगा, ''तुझे समझ नहीं है, परन्तु जीवन की परीक्षाएं तो अभी आरम्भ होनी हैं!'' हम में से अधिकतर लोग इस बात को समझते हैं कि स्कूल की औपचारिक शिक्षा पूरी करने के बाद हम प्रतिदिन की परीक्षाओं में लग जाते हैं। हमारे सामने आने वाली सब परीक्षाओं में से सबसे कठिन परीक्षाओं में शायद इस वचन में दी गई है, जिसका हम अध्ययन करने वाले हैं।

यह परीक्षा रोमियों 12:14 में दी गई थी: ''अपने सताने वालों को आशीष दो; आशीष दो स्राप न दो।'' 17 से 21 आयतों में इसे विस्तार दिया गया है:

> बुराई के बदले किसी से बुराई न करो; जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं, उन की चिन्ता किया करो। जहां तक हो सके, तुम अपने भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो। हे प्रियो अपना पलटा न लेना; परन्तु क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूंगा। परन्तु यदि तेरा बैरी भूखा हो, तो उसे खाना खिला; यदि प्यासा हो, तो उसे पानी पिला; क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा। बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।

आयत 14 को मिला लें तो इस वचन में चार नकारात्मक बातें हैं। इन चारों का संदेश मुख्यतया एक ही है।[1]

- ''अपने सताने वालों को आशीष दो; आशीष दो स्राप न [अपने सताने वालों को] दो।'' (आयत 14)।
- ''बुराई के बदले किसी से बुराई न करो; जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं'' (आयत 17)।
- ''बदला न लेना'' (आयत 19)।
- ''बुराई से न हारो'' (आयत 21)।

इन चारों को नकारात्मक से सकारात्मक से संतुलित किया गया है। अपने शत्रुओं को आशिष दो (आयत 14)। जो सही है वह करो और सबसे मेल मिलाप रखने की कोशिश करो (आयतें 17, 18)। बदला लेने का काम परमेश्वर के हाथ में छोड़ दो और अपने शत्रुओं से प्रेम दिखाने पर ध्यान लगाओ (आयत 19)। बुराई को भलाई से जीत लो (आयत 21)।

जॉन कैचल मैन ने रोमियों 12:17-21 को ''अन्तर व्यक्तिगत सम्बन्धों पर सबसे बड़े वचनों

में से एक'' कहा है।[2] पौलुस के मन में अविश्वासियों से सम्बन्ध बनाने की बात थी जो तुम्हें तंग करने की कोशिश करते हैं यानी सताने वालों (आयत 14) और शत्रुओं (आयत 20) और बुरे लोगों (आयत 21)। परन्तु वचन में सहमत न होने वाले भाइयों के साथ आगे बढ़ने के लिए भी लागू किया जा सकता है। इससे क्लेश से भरे परिवारों के लिए सहायता मिल सकती है। मैं इस पाठ को ''अप्रिय से प्रेम कैसे करें'' नाम दे रहा हूं। हम आयत 14 में संक्षेप में देखेंगे और फिर 17 से 21 आयतों पर ध्यान लगाएंगे।

उसके लिए प्रार्थना करें (12:14)

आयत 14 में हम पढ़ते हैं, ''अपने सतानेवालों को आशीष दो; आशीष दो स्राप न दो।'' हमने पहले भी देखा है कि ''आशीष'' का अर्थ ''परमेश्वर से उन्हें आशीष देने को कहना'' जबकि ''श्राप'' का अर्थ ''परमेश्वर से उन्हें श्राप देने को कहना है।'' हमें पहले वाली बात करनी चाहिए। यानी हम दूसरी बात नहीं कर सकते। आयत 14 को व्यक्त करने का एक आसान ढंग यह कहना है कि हमें अपने शत्रुओं के लिए *प्रार्थना करनी* चाहिए।

मैंने एक आदमी के बारे में पढ़ा था, जो आराधना में जाता था परन्तु चेहरे से लगता था कि वह नगर का सबसे दुखी आदमी है।[3] एक दिन वह अपने प्रचारक के कार्यालय में आकर पूछने लगा, ''क्या दूसरे सभी सदस्य सचमुच प्रसन्न हैं, या वे केवल प्रसन्न होने का दिखावा कर रहे हैं?''

प्रचारक ने कहा, ''मेरे विचार से उनमें से अधिकतर सचमुच प्रसन्न हैं।''

आदम ने कहा, ''अच्छा, मैं नहीं हूं। मैं दुखी हूं।''

उन्होंने बातचीत की कि उस आदमी को क्या परेशानी थी। बात यह निकली कि उसके पांच विरोधी थे, जिनसे वह घृणा करता था। ''वे अपराधियों की जुंडली हैं!'' उसने कहा, ''काश! वे सब मर जाएं!''

प्रचारक ने कहा, ''मैं आपको बता सकता हूं कि प्रसन्न कैसे रहना है, परन्तु आप मानेंगे नहीं।''

''हां, मैं मानूंगा,'' आदमी ने कहा।

प्रचारक ने सिर हिलाया, ''नहीं, आप नहीं मानेंगे।''

''हां, मैं मानूंगा,'' उस आदमी ने ज़ोर देकर कहा। ''बताओ तो सही मुझे क्या करना है।''

प्रचारक ने कहा, ''हर रात, सोने से पहले, घुटनों के बल होकर अपने विरोधियों का नाम ले लेकर उनके लिए प्रार्थना करो। परमेश्वर से उनके लिए नया कारोबार देने की आशीष मांगो।''

''क्या कहा!'' वह आदमी हैरान हुआ। ''मैं यह सब नहीं करने वाला!''

प्रचारक ने कहा, ''मैंने कहा था कि आप नहीं करेंगे।''

वह आदमी बुड़बुड़ाया, ''मैंने कहा था कि मैं करूंगा, कहा था कि नहीं? मुझे लगता है कि आपने मेरे साथ चालाकी की।''

कई सप्ताह बीत गए, प्रचारक ने देखा कि धीरे-धीरे उस आदमी का चेहरा बदल गया है। एक दिन वह आदमी फिर उसके कार्यालय में आया। ''ठीक है, भाई,'' उसने कहा, ''असर हुआ है अब मुझे अपने विरोधियों से कोई दिक्कत नहीं है। परन्तु मैं एक बात कहना चाहता हूं। जब मैंने

उनके लिए प्रार्थना करना आरम्भ किया, तो मैंने रुक कर ऊपर की ओर देखकर कहा, 'हे प्रभु, तू जानता है कि मैं यह नहीं कहना चाहता।' अन्त में मेरे कहने का यही अर्थ होने लगा और अब मैं प्रसन्न हूं।''

आप अप्रिय व्यक्ति से प्रेम कैसे कर सकते हैं ? पहला काम जो आप कर सकते हैं वह उसके लिए प्रार्थना करना है।

उसके साथ चलने की कोशिश करें (12:17, 18)

परीक्षा का यह भाग कठिन था, परन्तु 17 और 18 आयतों में यह परीक्षा और चुनौतीपूर्ण हो जाती है: ''बुराई के बदले किसी से बुराई न करो; जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं, उन की चिन्ता किया करो। जहां तक हो सके, तुम अपने भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो।''

नकारात्मक: बदला न लो (आयत 17)

आयत 17 आरम्भ होती है, ''बुराई के बदले किसी से बुराई न करो।'' अधिकतर स्वाभाविक प्रवृत्तियों में से एक आत्मरक्षा है। जब कोई हमारे साथ दुर्व्यवहार करता है, तो हम वापस हमला करना चाहते हैं। हम उसे ब्याज सहित वापस करना चाहते हैं।[4] दूसरे को मारने का बहाना बनाते हुए एक बच्चा कहता है, ''पर उसने पहले मुझे मारा!'' कइयों में यह सोच कभी निकलती नहीं है। आयत 2 में पौलुस ने कहा, ''इस संसार के सदृश न बनो।'' ''बुराई के बदले बुराई दो'' कि संसार के आदेश को न मानना कितना कठिन है!

आपको यीशु के चौंकाने वाले शब्द याद हैं:

> तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था, आंख के बदले आंख, और दांत के बदले दांत। परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूं, बुरे का सामना न करना। परन्तु यदि कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे। और यदि कोई तुझ पर नालिश करके तेरा कुरता लेना चाहे, तो उसे दोहर भी ले लेने दे। और जो कोई तुझे कोस भर बेगार में ले जाए, तो उसके साथ दो कोस चला जा (मत्ती 5:38-41)।

डग्लस जे. मू ने बदला न लेने के नियम को ''मसीही लोगों की पहचान की सबसे अलग खूबियों में से एक'' कहा है।[5]

क्या पौलुस की आज्ञा के अपवाद हैं ? उसने कहा, ''बुराई के बदले *किसी से* बुराई न करो।'' यूनानी धर्मशास्त्र में, ''किसी से'' ज़ोर देने के लिए वाक्य के आरम्भ में है। हम में से अधिकतर लोगों के लिए यह कितनी बड़ी परीक्षा है।

सकारात्मक: जो सही है वही करें (आयत 17ख)

यदि हमें बुराई का बदला बुराई नहीं देना है तो फिर हमें क्या करना चाहिए जब हमारे साथ दुर्व्यवहार किया जाता है ? हम 17 और 18 आयतों की सकारात्मक आज्ञाओं में जाते हैं। पौलुस ने कहा, ''जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं, उनकी चिन्ता किया करो''[6] (आयत 17ख)। ''भली हैं'' का अनुवाद *kalos* के एक रूप से किया गया है जो ''उसका संकेत देता है जो 'भला'

करने की प्रवृत्ति रखता है।'' इस आयत में इसका अर्थ ''जो नैतिक रूप से अच्छा, सही, सम्माननीय, आदर योग्य'' है।[7] दूसरों का व्यवहार चाहे जैसा भी हो, मसीही व्यक्ति एक अच्छा नमूना देने की कोशिश करता है। एक और जगह पौलुस ने लिखा है कि ''जो बातें केवल प्रभु ही के निकट नहीं, परन्तु मनुष्यों के निकट भी भली [*kalos* से] हैं हम उन की चिन्ता करते हैं'' (2 कुरिन्थियों 8:21)।

जे. बी. फिलिप्स के अनुवाद में रोमियों 12:17 के अन्तिम भाग को इस प्रकार लिखा गया है: ''यह न कहा, 'लोग चाहे जो भी सोचते हों इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।' '' ऐसी परिस्थितियां होती हैं जिनमें मसीही व्यक्ति को कहना आवश्यक है कि ''लोग चाहे जो भी सोचते हों इससे कोई फर्क नहीं पड़ता'' उदाहरण के लिए, जब अपने विश्वास के लिए उसकी योजना होती है। परन्तु आम तौर पर मसीही व्यक्ति निर्दोष जीवन जीने की कोशिश करता है। फिलिप्पस के अनुवाद में यह जोड़ा गया है, ''देखो कि तुम्हारा सार्वजनिक व्यवहार आलोचना से ऊपर हो।''

सकारात्मक: मेल मिलाप रखो (आयत 18)

फिर पौलुस ने कहा कि हम हर किसी के साथ जिसमें हमें सताने की कोशिश करने वाले भी शामिल हैं, मेल मिलाप से रहने की कोशिश करें। आयत 18 कहती है, ''जहां तक हो सके, तुम अपने भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो।'' आयत 17 की तरह प्रेरित ने अपनी इस आज्ञा को विस्तारपूर्वक कहा: ''*सब मनुष्यों* के साथ मेल मिलाप रखो।''

बेशक कोई यह विरोध करेगा, ''परन्तु यह असम्भव है!'' पौलुस को अनुमान था कि जब उसने यह कहा कि ''हो सके ...।'' कई बार मेल मिलाप से रहना असम्भव हो जाता है, क्योंकि मेल मिलाप की कीमत सच्चाई या निष्ठा से समझौता करना होगी और यह कीमत बहुत अधिक है। अन्य समयों में मेल मिलाप इसलिए असम्भव होता है, क्योंकि हम चाहे जो भी करें, दूसरे व्यक्ति ने मेल न करने की ठान रखी होती है।

यह हमें पौलुस की दूसरी योग्यता पर ले आता है: ''जहां तक हो *सके*।'' कैचलमैन ने लिखा है कि ''हम सम्बन्ध के अपने भाग के लिए ही जिम्मेदार हैं।''[8] आप किसी दूसरे व्यक्ति के काम या उसकी प्रतिक्रिया के ढंग को संचालित नहीं कर सकते। परन्तु वह बात को माने या न, *आप* मेल बढ़ाने के लिए जो भी कर सकते हों, करें। पहाड़ी उपदेश में यीशु ने कहा, ''धन्य हैं वे, जो मेल कराने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे'' (मत्ती 5:9)।

मुझे यह ज़ोर देना चाहिए कि पौलुस ने हमें मेल कराने के लिए जो कुछ हम कर सकते हैं उसके लिए बहाने देने के लिए ''हो सके,'' ''तुम अपने भरसक'' दो योग्यताएं नहीं दीं। वह यह *नहीं* कह रहा था कि ''यदि आप जल्दी क्रोधित हो जाते हैं और अपने आप पर काबू नहीं पा सकते तो कोई बात नहीं'' या ''यदि आपने थोड़ा प्रयास किया है, यही परमेश्वर आपसे उम्मीद रखता है।'' वह हमें अपनी सामर्थ के भीतर ''सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप'' रखने के लिए सब कुछ करने की चुनौती दे रहा था।

कोई सोच सकता है, ''परन्तु यदि मैं बुराई का बदला बुराई नहीं देता, मेरे शत्रु मुझ पर हावी हो जाएंगे।'' हो सकता है। कोई और विरोध कर सकता है, ''यदि मैं बुराई का बदला बुराई से देने से दूर भी रहूं तौभी मेरे शत्रु मुझ से घृणा करते रहेंगे।'' यह एक सम्भावना है, परन्तु उनकी घृणा *उनकी* समस्या है। पौलुस ने कहा कि मेल मिलाप करने के लिए हम जो कुछ भी कर सकते हैं

वह करना है। एक दयालु आदमी की कहानी बताई जाती है जो किसी जंगली जानवर को फंदे से निकालने की कोशिश कर रहा था। उसके ऐसा करते समय वह जानवर उस पर फुफकार रहा था और उसे पंजा मारने की कोशिश कर रहा था। राह चलते किसी ने पूछा, ''आप उस जानवर की सहायता करने की कोशिश में इतना परेशान क्यों हो रहे हैं? हो सका तो वह आपको घायल कर देगा।'' आदमी ने उत्तर दिया ''फुफकारना और पंजे मारना उसका स्वभाव है और सहायता करना मेरा स्वभाव है।'' वह अपना स्वभाव नहीं बदल सकता तो मैं उसके लिए अपना स्वभाव क्यों बदलूं?[9]

आप किसी अप्रिय व्यक्ति को प्रेम कैसे कर सकते हैं? उससे मेल मिलाप करने की पूरी कोशिश करें।

उसकी सहायता करें (12:19, 20)

परीक्षा और कठिन होती रहती है। 19 और 20 आयतों में हमें दूसरों की *सहायता* तब भी करने की चुनौती दी जब वे हमें हानि पहुंचाने की कोशिश करते हैं।

नकारात्मक: बदला लेने की चाह न रखें (आयत 19क)

फिर पौलुस ने एक नकारात्मक के साथ आरम्भ किया: ''हे प्रियो अपना पलटा न लेना'' (आयत 19क)। आयत 1:7 के बाद से पहली बार पौलुस ने अपने पाठकों को ''हे प्रियो'' कहकर सम्बोधित किया (*agapetos, agape* परिवार के शब्दों से)।[10] उसने यहां इस शब्द का इस्तेमाल क्यों किया। शायद वह इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि उसकी चर्चा अभी भी गम्भीर ''प्रेम [*agape*]'' पर ही केन्द्रित थी (आयत 9)। शायद यह विचार करते हुए कि उसकी आज्ञाओं को पूरा करने के लिए उन्हें कितना संघर्ष करना पड़ेगा उसका मन अपने भाइयों और बहनों के लिए पसीज गया।

यदि प्रसिद्ध विचार के सीधे विरोध में कोई बाइबली बात है तो यह है कि ''अपना पलटा न लेना।'' हम ऐसे युग में रहते हैं जिसमें अपना बदला लेने को प्रोत्साहित किया जाता है, बल्कि इसका जश्न भी मनाया जाता है।[11] कई पुस्तकों, फिल्मों, और टीवी कार्यक्रमों की मुख्य बात बदला लेना ही होती है। बड़े-बड़े स्टिकरों, पोस्टरों और टी-शर्टों पर लिखा होता है, ''I don't get mad. I get even.'' कई बार बदला लेने को सजाकर पेश करने और इसे ''व्यक्तिगत न्याय'' कहने की कोशिश की जाती है। कई लोग तो पुराने नियम की आज्ञा का दुरुपयोग करते हुए बदला लेने को बहाना बनाने की कोशिश करते हैं ''आंख के बदले आंख, और दांत के बदले दांत'' (देखें निर्गमन 21:24; लैव्यव्यवस्था 24:20)।[12] लोग इसे जो भी नाम देने और जितना भी सजावटी बनाने की कोशिश क्यों न करें, यह आज भी बुराई का बदला बुराई यानी पलटा लेना है; पौलुस आज भी कहता है, ''ऐसा न करो!''

बहुत पहले, फ्रांसिस बेकन (1561-1626) ने लिखा, ''बदला लेकर आदमी अपने शत्रु के समान हो जाता है परन्तु इसे दूसरे पर छोड़कर वह अपना बॉस बन जाता है।''[13] डेल हार्टमैन ने ध्यान दिलाया है कि जब हम बदला लेते हैं तो हम दो बार हार जाते हैं। पहले तो हम दुर्व्यवहार किए जाने के समय जो कुछ खोते हैं वह खोते हैं। दूसरा (और यह अधिक गम्भीर है), हम

परमेश्वर की आज्ञाओं को न मानकर आत्मिक रूप में हारते हैं।[14]

कोई और यह विरोध कर सकता है, ''यदि मैं अपना साथ देने के लिए खड़ा नहीं होता, तो लोग समझेंगे कि मैं कमजोर हूं।'' यह हो सकता है, परन्तु इस पर विचार करें: जब किसी के पास बदला लेने के साधन हों, तो बदला *न* लेने के लिए उससे अधिक व्यक्तिगत सामर्थ की आवश्यकता होती है। जब यीशु क्रूस पर था, तो तमाशबिनों द्वारा उसे ताने मारे जा रहे थे, जो कहते थे, ''यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ'' (मत्ती 27:40ख)। वह क्रूस से उतर सकता था। उसके पास अपने शत्रुओं को खामोश करने की सामर्थ थी। परन्तु उसने उस सामर्थ को बदला *न* लेकर दिखाया। क्या इसका अर्थ यह है कि बुराई को दण्ड दिए बिना जाने देना चाहिए? कदापि नहीं। इसका अर्थ केवल यह है कि उस दण्ड को देने के लिए आप और मैं सतर्कता सीमित न हों। तो फिर बुराई को दण्ड कैसे मिलेगा? हमारा वचन पाठ पढ़ें।

सकारात्मक: बदला लेना परमेश्वर के हाथ में छोड़ दें (आयत 19ख, ग)

''हे प्रियो अपना पलटा न लेना; परन्तु [परमेश्वर के] क्रोध [*orge*]को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूंगा'' (रोमियों 12:19क, ख)। यूनानी धर्म शास्त्र में ''परमेश्वर के'' शब्द नहीं हैं। इसमें है ''क्रोध को अवसर दो'' (देखें KJV) परन्तु अगला वचन स्पष्ट कर देता है कि पौलुस के मन में परमेश्वर का क्रोध ही था:[15] ''क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूंगा'' (आयत 19ग)। CJV में है ''बदला लेना मेरी जिम्मेदारी है; मैं ही चुकाऊंगा।''

पौलुस ने दो भिन्नताएं कीं। आयत 17 में उसने कहा, ''बुराई के बदले बुराई न करो।'' क्यों? क्योंकि यह काम परमेश्वर का है: ''पलटा लेना *मेरा* काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूंगा'' (आयत 19)। आयत 19 के पहले भाग में उसने कहा कि हमें अपना पलटा [*ekdikeo*] नहीं लेना है। आयत के अन्तिम भाग में, उसने समझाया कि फिर, यह परमेश्वर का काम है: ''पलटा [*ekdikesis*] लेना मेरा काम है।'' परमेश्वर कहता है।

''परमेश्वर के क्रोध के लिए जगह छोड़ दो'' का अर्थ है कि हमें परमेश्वर के काम में टांग अड़ाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, कि हमें एक साइड में होकर परमेश्वर को बुराई को दण्ड देने का काम करने देना चाहिए। टेलर केयो ने एक घटना बताई जो दक्षिणी अमेरिकी देश में हुई थी।[16] एक आदमी ने अपनी भूमि से लकड़ियां चुराते हुए दो चोरों को पकड़ लिया। उसने उनका सामना किया और उन्हें निकल जाने का आदेश दिया। जाते-जाते उन्होंने बदला लेने की शपथ खाई। बाद में उन्होंने उस आदमी को और उसके बड़े पुत्र को मार डाला। दोनों को पुलिस द्वारा पकड़ लिया गया। पुलिस छोटे लड़के को दोनों आदमियों के पास ले गई और उससे कहने लगी, ''ये बंदूक है। हम एक साइड में खड़े हो जाएंगे। तुम जो चाहे करो।'' जवान आदमी ने बंदूक वापस रख दी और उत्तर दिया, ''नहीं, यह परमेश्वर का काम है!''

जब डेल हार्टमैन जवान था तो एक पुराने प्रचारक ने उसे बताया, ''कभी बदला लेने में न उलझो और किसी बात को जिसे परमेश्वर बेहतर बना सकता है खराब न करो।''[17] परमेश्वर सब कुछ जानता है, परन्तु हम नहीं। परमेश्वर सब कुछ देखता है, परन्तु हम नहीं। परमेश्वर के पास पूरी सामर्थ है, परन्तु हमारे पास नहीं। आर. सी. बेल्ल ने लिखा है कि जब दण्ड को अपने शत्रुओं

को दे देते हैं, तो हमारी पाप से सनी और जुनून से सटी सोच, हमारा अधूरा ज्ञान और मनों को जानने की हमारी अक्षमता हमें सही करने से रोकती है।[18]

परमेश्वर बुराई का बदला कैसे देता है? रोमियों की पुस्तक में कम से कम तीन ढंग सुझाए गए हैं:

- कुछ दण्ड पाप के स्वाभाविक परिणामों से मिलता है। कइयों को ''अपने भ्रम का ठीक फल'' मिलता है (रोमियों 1:27)। जिमी ऐलन ने लिखा है, ''दुष्टों को उनके पाप *का* दण्ड उतना नहीं मिलता जितना अपने पाप *से* वे हैं।''[19]
- दण्ड को कई बार मानवीय अदालतों में मापा जाता है। अध्याय 13 ज़ोर देता है कि परमेश्वर ने मानवीय सरकार को अपने सेवकों में से एक के रूप में ठहराया, ''कि उसके क्रोध [*orge*] के अनुसार बुरे काम करनेवाले को दण्ड दे'' (रोमियों 13:4)।
- निश्चय ही अपश्चात्तापी लोगों को अन्तिम और पूरी अदायगी ''क्रोध [*orge*] के लिए, जिस में परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने निमित्त क्रोध कमा रहा है। वह हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला'' (रोमियों 2:5, 6) देकर करेगा।

सकारात्मक: उसकी सेवा करने के ढंग तलाशें (आयत 20)

यदि हमें किसी शत्रु से बदला लेने की अनुमति न मिले, तो हम क्या कर सकते हैं? हम उससे प्रेम कर सकते हैं और उसकी सहायता करने की कोशिश कर सकते हैं। पौलुस ने व्यवस्थाविवरण 32:41 के साथ नीतिवचन 25:21 से अपने उद्धरण को आगे बढ़ाया: ''परन्तु यदि तेरा बैरी भूखा हो, तो उसे खाना खिला; यदि प्यासा हो, तो उसे पानी पिला'' (रोमियों 12:20क)। ये शब्द लूका 6:27 में यीशु की आज्ञा की व्यवहारिक प्रासंगिकता हैं: ''परन्तु मैं तुम सुनने वालों से कहता हूं, कि अपने शत्रुओं से प्रेम रखो; जो तुम से बैर करें, उन का भला करो।'' लड़ाई से भागना ही काफ़ी नहीं है; हमें अपने विरोधियों की सहायता के लिए रास्ते तलाशने के लिए आरम्भ करना भी आवश्यक है।

संसार सलाह देता है, ''अपने शत्रुओं की कमज़ोरियों का पता लगाओ और उनका शोषण करो। क्या वह भूखा है तो उसे भूखा मारो। उसे प्यास लगी है तो उसे प्यास से मरने दो।'' परन्तु प्रेम कहता है, ''पता लगाओ कि तुम्हारे शत्रु की क्या आवश्यकताएं हैं और उन्हें पूरा करो– भोजन, पानी या *जो* उसकी आवश्यकता हो।''

जब कोई आप के साथ गलत करता है तो इसके चार सम्भावित प्रत्युत्तर होते हैं। यह आपको आहत करता है, यदि वह आपको आहत करता है तो आप उसे उससे अधिक आहत कर सकते हैं; यही बदला लेना है। यदि वह आपको आहत करता है, तो आप उसके साथ वैसे ही व्यवहार कर सकते हैं; यह बदला लेना है। यदि वह आपको घायल करता है तो आप उसे अनदेखा कर सकते हैं और उससे कोई सम्बन्ध नहीं रखते; यह तिरस्कार करना है। अन्त में यदि वह आपको चोट पहुंचाता है, तो आप उसे प्रेम कर सकते और उसकी सेवा कर सकते हैं; यह मसीह का तरीका है![20] बैंजामिन फ्रैंकलिन ने कहा, ''घायल करना आपको अपने शत्रु के नीचे ले आता है; बदला लेना आपको उसके साथ ही मिला देता है; क्षमा करना आपको उससे ऊपर उठा देता है।''[21]

कुछ समय पहले मैंने एक विवाहित दम्पत्ति पर एक पुस्तक पढ़ी थी जो प्रभु की कलीसिया के सदस्य थे। उनका किशोर लड़का एक शराबी ड्राइवर के हाथों मर गया था जो उनके बेटे की उम्र का ही एक नौजवान था। वे बर्बाद हो गए थे और पहले तो उन्हें बड़ा आघात पहुंचा। परन्तु उन्हें मालूम था कि मसीह और पौलुस ने क्या सिखाया है। परमेश्वर की सहायता से, उन्होंने उस जवान को दोस्त बना लिया और उसे बसाने के लिए उसकी सहायता की। अन्त में, उसके जीवन में आशीष मिली और उनके जीवनों में भी।[22]

यदि हम अपने शत्रुओं का भला करते हैं, तो इसका परिणाम क्या होगा? पौलुस ने नीतिवचन 25:22 से यह चौंकाने वाले शब्द दोहराए हैं: ''ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा'' (रोमियों 12:20ख)। लियोन मौरिस ने पौलुस के शब्दों को ''रूपांतरकार अभिव्यक्ति जिसका अर्थ स्पष्ट नहीं है'' कहा।[23] वाक्यांश के मूल के बारे में कई अनुमान लगाए गए हैं। कई लोग यह ध्यान दिलाते हैं कि बाइबल के देशों में लोग अपने सिरों पर बर्तन ले जाते थे। यदि किसी शत्रु की आग बुझ गई हो और वह फिर से आग जलाने के लिए कोयले तलाश रहा हो तो अपने सिर पर ले जा रहे आग के उस कटोरे में आग डालना उदारवादी काम होगा।[24] कई लेखक ''मिसरी रीति की बात करते हैं जिसमें व्यक्ति सार्वजनिक रूप से अपने सिर के गिर्द कोयले की जलती कड़ाही ले जाकर अपने पश्चात्ताप की गवाही देता था।''[25] मेरा पसंदीदा अनुमान जिमी ऐलन वाला ही है। उसने ध्यान दिलाया कि जब शत्रु नगर पर हमला करते, तो नगर के लोग शहरपनाह की रखवाली के हमला करने वालों के सिरों पर चीजें फैंकते, जिसमें जलते हुए कोयले ही होते थे। ऐलन ने सुझाव दिया कि पौलुस की बातों का अर्थ है कि बुराई से बचने का बढ़िया ढंग भलाई करना है।[26]

हमें पौलुस के रूपक का मूल संक्षेप में चाहे न पता हो, तौभी हम में से अधिकतर लोग समझते हैं कि इन शब्दों का अर्थ है कि अपने सताने वालों का भला करना हमें सकारात्मक ढंग से प्रभावित करने वाला होना चाहिए। MSG में पौलुस के शब्द इस प्रकार मिलते हैं: ''तुम्हारी उदारता उसे भलाई के साथ चकित कर देगी।'' SEB में है ''तुम उसे अन्दर से शर्म से राख कर दोगे।'' बुराई के बदले भलाई करना उसके विवेक को जगाने और उसे मन फिराव के लिए लाने वाला *हो* सकता है। विलियम बार्कले ने लिखा है, ''बदला लेने से उसका मन टूट सकता है; परन्तु दयालुता से उसका मन जुड़ सकता है।''[27]

क्या किसी शत्रु से भलाई करने का परिणाम बिल्कुल यही होगा? नहीं। परन्तु ऐसा करने से आम तौर पर *आपको* सहायता मिलेगी। आप जान सकते हैं कि आपने जो कुछ कर सकते थे किया और आप अपने मन की कड़वाहट से पीछा छुड़ा सकते हैं। इसके अलावा बुराई के बदले बुराई करने का *कई बार* उस पर सकारात्मक असर पड़ सकता है जिस ने बुराई की हो। *इंडिया रिपोर्ट* में एक पड़ोसी की बात बताई गई है जिसने लाउड स्पीकर से हिन्दुओं के गीत लगाकर कलीसिया की सभाओं को खराब करने की कोशिश की। एक दिन उस क्षेत्र में भयानक तूफ़ान आ गया। उस पड़ोसी ने दूसरे लोगों के साथ गिरजा घर में आश्रय लिया। कलीसिया के लोगों ने उन्हें तीन दिन तक खाना खिलाया। बाद में उस आदमी ने सुसमाचार की आज्ञा मान ली।[28]

कहा जाता है कि शत्रु से पीछा छुड़ाने का सबसे बढ़िया ढंग उसे मित्र बना लेना है। किसी अप्रिय व्यक्ति से हमें कैसे प्रेम करना चाहिए? हम उसकी *सहायता* करने के ढंग ढूंढ़ने की कोशिश कर सकते हैं।

उसके साथ केवल भलाई करो (12:21)

आयत 21 में पौलुस ने संक्षेप में बताया कि अपने दमनकारी के सम्बन्ध में उसने क्या कहा था: ''बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।'' ''हारो'' (*nikao* से) के लिए शब्द ''विजय'' के लिए यूनानी शब्द *nike* के क्रिया रूप से लिया गया है।[29] जब हमारे साथ दुर्व्यवहार हो, तो बुराई से गिर जाना, इसे अपने ऊपर काबू पाने देना आसान हो जाता है। पौलुस ने कहा कि या तो बुराई हमारे ऊपर विजय पा लेगी या हम बुराई पर विजय पा लेंगे।

बुराई से न हारो (आयत 21क)

आयत 21 आरम्भ होती है, ''बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।'' हम बुराई से कैसे हार सकते हैं? अभी पढ़ी गई आयतों पर ध्यान दें। यदि हम परमेश्वर से अपने शत्रुओं को श्राप देने के लिए कहें (आयत 14), तो हम बुराई से हार गए हैं। यदि हम बुराई के बदले बुराई करने की कोशिश करें (आयत 17), तो हम बुराई से हार गए हैं। यदि हम बदला लेना चाहें (आयत 19), तो बुराई ने हमारे ऊपर जय पा ली है। ऐसा होने पर, जॉन आर. स्टॉट ने कहा, ''हम बुराई के आगे हार गए हैं, इसके प्रभाव में गिर गए हैं और फिर हार गए हैं, ... इस के 'वश में' आ गए [फिलिप्स]।''[30]

सकारात्मकः भलाई से बुराई को जीतना (आयत 21ख)

हम बुराई को विजयी होने से कैसे रोक सकते हैं? पौलुस ने कहा, ''भलाई से बुराई को जीत लो'' (आयत 21ख)। इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ परमेश्वर से अपने शत्रुओं के लिए आशीष मांगना है (आयत 14)। इसका अर्थ अपने पूरे तन मन से हर किसी के साथ मेल मिलाप से रहने की कोशिश करना है (आयत 18)। इसका अर्थ हर व्यक्ति से जो हमें हमारा विरोध करता है भलाई करना अर्थात उससे प्रेम करना और उसकी आवश्यकताओं को पूरा करना है (आयत 20)।

क्या भलाई से बुराई को जीतना आसान है? नहीं। क्या यह सम्भव है? हां, प्रभु की सामर्थ से। परमेश्वर की सहायता से, आप और मैं भलाई के साथ बुराई पर विजय पा *सकते* हैं।

सारांश

मैंने इस पाठ का आरम्भ यह कहते हुए किया था कि मसीही लोगों के रूप में हमारे सामने आने वाली सबसे कठिन परीक्षा एक अप्रिय लोगों से प्रेम करना है। सभी परीक्षाओं की तरह यह कई लोगों के लिए दूसरी परीक्षाओं से अधिक चुनौती भरी है। कुछ लोग अपने स्वभाव तथा माहौल के कारण उन लोगों को दुखी करना चाहते हैं जो उन्हें दुखी करने की कोशिश करते हैं। परन्तु सब के लिए यह परीक्षा आसान नहीं है।

सब परीक्षाओं की तरह, यह हमारे लिए भी आसान होगी यदि हम इसके लिए *तैयारी* करें। तैयारी के लिए हमें वैसे ही निश्चय करना पड़ेगा जैसे रोमियों 12:14, 17–21 में पौलुस ने आज्ञा दी। फिर हमें प्रभु के निकट रहना पड़ेगा ताकि वह वैसा ही करने में हमारी सहायता कर सके। चाहे हम तैयारी कर भी लें, क्या हम इस परीक्षा को हमेशा पास कर सकेंगे? सम्भवतया नहीं। परन्तु यदि हम

फेल हो गए, तो (एक अर्थ में) दूसरी बार परीक्षा दे सकते हैं। हम अपनी असफलताओं से मन फिराकर परमेश्वर से हमें क्षमा करने को कह सकते हैं। हम अपने सताने वालों के पास जाकर कह सकते हैं, ''मैंने एक मसीही की तरह जवाब नहीं दिया। मैं अपने कामों के कारण शर्मिंदा हूं और क्षमा चाहता हूं।''

प्रचारकों तथा सिखाने वालों के लिए नोट्स

जब आप इस प्रवचन का इस्तेमाल करें तो अपको बताना चाहिए कि मसीही बनकर (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38) या भटके हुए मसीही होने पर, प्रभु की ओर लौटकर (प्रेरितों 8:22; 1 यूहन्ना 1:9) ''प्रभु के निकट'' कैसे रहा जा सकता है। आप कुछ इस प्रकार कह सकते हैं: ''नकारात्मक भावनाओं के प्रति समर्पण करने के बजाय, अपने मन और जीवन प्रभु को सौंप दें।'' इस पाठ के और शीर्षक ''बुराई पर विजय'' हो सकता है।

ध्यान दें कि हमारे अगले पाठ में पौलुस ने परिवार और इससे जुड़े मामलों के बजाय की बात नहीं की। बल्कि उसने नुक्सान हो जाने के बाद व्यक्तिगत बदला देने की बात पर ध्यान नहीं लगाया।

टिप्पणियां

[1]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 334-45 से लिया गया। [2]जॉन केचलमन, ''हाऊ टू रियली 'इवन द स्कोर,' '' चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, जुडसोनिया आरकैंसा, 14 जून 2003 में दिया गया प्रवचन। [3]सी. रॉय एंगल, *आयरन शूज़* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1953), 52-53 से लिया गया। [4]ब्रूस बार्टन, डेविड वीरमन एण्ड नेल विलसन, *रोमन्स,* लाइफ एप्लीकेशन बाइबल कमैंट्री (व्हीटन, इलिनोइस: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1992), 243. [5]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 417. [6]KJV ''वे चीज़ें उपलब्ध कराओ जो सब लोगों की नज़र में ईमानदार हों।'' ''भली हैं'' *kalos* में ईमानदार होना शामिल है, परन्तु इसमें इससे भी अधिक बातें आती हैं। NKJV में है, ''उन बातों का सम्मान करो जो सब लोगों की नज़र में भली हैं।'' [7]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़ अंगर एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोजिस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 274. [8]जॉन केचलमन, ''हाऊ टू हैंडल हॉस्टिलिटी,'' *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* (अंग्रेज़ी संस्करण, मई 1989): 27. [9]राबर्ट जे. मोरगनन, *नेल्सन'स कम्पलीट बुक ऑफ़ स्टोरीज़, इलस्ट्रेशंस एण्ड कोट्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 2000), 267-68 से लिया गया। [10]कई अनुवादों में ''मित्रो'' या ''प्रिय मित्रो'' जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया गया है परन्तु *agapetos* मज़बूत और केवल मित्रता से गहरा शब्द है।

[11]जहां आप रहते हैं उसके अनुसार इस पद्य को बदल लें। परिवारों के बीच में देर तक रहने वाली जागीरें व्यक्तिगत बदला लेने के लिए लोगों की कोशिश का एक उदाहरण है। [12]इसका दुरुपयोग होता है, पहले तो यह कि पुराने नियम की आज्ञा व्यक्तिगत बदला लेने के बारे में इतनी नहीं है जितनी समाज द्वारा दण्ड देने के बारे में है। दूसरा हम आज नये नियम के मानकों से चलते हैं (देखें मत्ती 5:38-42)। [13]लुईस कोपलैंड, संपा., *पॉपुलर कोटेशंस फ़ॉर ऑल यूसेज,* संशो. संस्क. (गार्डन सिटी, न्यू यार्क: डबलडे एण्ड कं., 1961), 391. [14]डेल हार्टमैन, ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा, 24 अक्तूबर 2004 को दिया गया प्रवचन। [15]सुझाव दिया गया है कि पौलुस ने सताए गए लोगों के क्रोध की बात की या सताने वालों के क्रोध की, परन्तु संदर्भ यह संकेत देता है कि वह परमेश्वर

के क्रोध की बात कर रहा था। [16]टेयलर केव, ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, ओक्लाहोमा 14 जुलाई 2005 को पढ़ाई कई क्लास में। [17]डेल हार्टमैन, ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लोहोमा 21 दिसंबर 2003 को पढ़ाई गई क्लास में। [18]आर. सी. बेल्ल, *स्टडीज़ इन रोमन्स* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 141–42. [19]जिम्मी एलन, *सर्वे ऑफ़ रोमन्स, चौथा संस्करण,* संशो. (सरसी, आरकैंसा: लेखक द्वारा, 1973), 105. [20]जिम मैक्गिन, *द बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इन टू द बाइबल सीरिज (लब्बॉक, टैक्सस: मौंटैक्स पब्लिशिंग कं., 1982), 373 से लिया गया।

[21]ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा, 3 अप्रैल 2005 में दिए गए डेल हार्टमैन के प्रवचन से लिया गया; USHistory.org™; ''द इलैक्ट्रिक बेन फ्रेंक्लिन: द इलैक्ट्रिक बेन फ्रेंक्लिन; द कोटेबल फ्रेंक्लिन'' (http://www.ushistory.org/franklin/quotable/singlehtml.htm; Internet; accessed 1 जून 2006) को इंटरनेट से देखा गया। [22]बॉब स्टुअर्ट, *रिवेंज रिडीम्ड* (ओल्ड टैपन, न्यू जर्सी: फ्लेमिंग एच. रेवल कं., 1991), 86. [23]लियोन मौरिस, *द एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिडस, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैन्स पब्लिशिंग कं., 1988), 454. [24]जिम टाऊनसैंड, *रोमन्स* लैट जर्टिस रोल (एलजिन, इलिनोइस: डेविड सी. कुक पब्लिशिंग कं., 1988), 86. [25]एफ. एफ . ब्रूस, *द लैटर ऑफ पॉल टू द रोमन्स,* द टिण्डेल न्यू टैस्टामैंट कमैंटरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस कं., 1985), 217–18. [26]ऐलन, 105. [27]विलियम बार्कले, *द लैटर टू रोमन्स,* संशो. संस्क. द डेली स्टडी बाइबल सीरीज (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंसटर प्रैस, 1975), 170. [28] *इंडिया रिपोर्ट,* सैंट्रल चर्च आफ़ क्राइस्ट, लफ्किन, टैक्सस, 15 जुलाई 2002. [29]वाईन, 453, 660. यदि आपके सुनने वाले Nike के जूतों से परिचित हैं तो आप उदाहरण के रूप में उस ब्रांड नाम को बता सकते हैं। [30]स्टॉट, 337.